Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D.-7

भाषा-विज्ञान और हिन्दी भाषा

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Hemant Kumar,* M.A. (Hindi)

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 380/-

Content

भाषा–विज्ञान और हिन्दी भाषा

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

भाषाविज्ञान

1. भाषा और संप्रेषण 1
2. भारत में भाषा चिंतन 12
3. भाषाविज्ञान की पाश्चात्य परंपरा 19
4. संरचनात्मक भाषाविज्ञान 30
5. चॉम्स्की तथा रूपांतरण–निष्पादन व्याकरण 38
6. समाजभाषाविज्ञान : भाषा और समाज 45
7. हिन्दी भाषा क्षेत्र 60

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

हिंदी संरचना

8. ध्वनि संरचना : हिंदी की समस्याएँ 68

9. रूप, शब्द और पद 88

10. वाक्य संरचना-I 100

11. वाक्य संरचना-II 111

12. अर्थ-संरचना 120

13. प्रोक्ति विश्लेषण 134

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान

14. मनोभाषाविज्ञान 144

15. भाषा-शिक्षण-I 153

16. भाषा-शिक्षण-II 164

17. अनुवाद 173

18. भाषा तुलना 186

19. शैलीविज्ञान 194

20. कोशविज्ञान 209

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भाषा-विज्ञान और हिन्दी भाषा **M.H.D.-7**

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. भाषा परिवर्तन के प्रकार और कारणों को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-28, 'अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न'

प्रश्न 2. चोमस्की की भाषा संबंधी अवधारणा पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-40, प्रश्न 1

प्रश्न 3. फर्दिनांद द सस्युर का भाषा विज्ञान के अध्ययन में क्या योगदान है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-33, प्रश्न 2

प्रश्न 4. शैली की संकल्पना स्पष्ट करते हुए शैली विज्ञान और भाषा विज्ञान के पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-194, 'शैली क्या है?' पृष्ठ-196, 'शैलीविज्ञान और भाषा विज्ञान'

प्रश्न 5. भाषा शिक्षण के विभिन्न पक्षों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-157, प्रश्न 1, पृष्ठ-159, प्रश्न 2, पृष्ठ-155, 'भाषा शिक्षण और सामग्री निर्माण'

प्रश्न 6. रूप की संकल्पना स्पष्ट करते हुए इसके प्रमुख प्रकारों के बारे में बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-88, 'रूप की संकल्पना', पृष्ठ-97, '*(v)* रूप के प्रकार'

प्रश्न 7. भाषा और व्याकरण की संकल्पना पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-38, 'भाषा और व्याकरण की संकल्पना'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) ब्लूमफील्ड का भाषा चिंतन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-34, प्रश्न 3

(ख) हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-66, '*(iii)* अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी'

(ग) संप्रेषण में भाषा की भूमिका

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-155, 'संप्रेषणपरक भाषा शिक्षण'

(घ) प्रोक्ति का अर्थ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-135, 'प्रोक्ति'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो में अंतर स्पष्ट कीजिए–

(क) पर्याय और विलोम

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-123, 'पर्यायता', पृष्ठ-125, 'विलोमता'

(ख) लोकोक्ति और मुहावरे

उत्तर–मुहावरा–मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है–'अभ्यास'। हिन्दी में इसका अर्थ होता है–"लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य, जो किसी एक ही बोली या लिखी जाने वाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो"

ऐसा वाक्यांश, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, मुहावरा कहलाता है। इसे वाग्धारा भी कहते हैं।

लोकोक्ति–यह दो शब्दों से मिलकर बना है–'लोक'+'उक्ति' अर्थात् किसी क्षेत्र विशेष में कही हुई बात। इसके अंतर्गत किसी कवि की प्रसिद्ध उक्ति भी आ जाती है। लोकोक्ति किसी प्रासंगिक घटना पर आधारित होती है। ये गद्य और पद्य दोनों में ही देखने को मिलती हैं।

इस प्रकार, ऐसा वाक्य, कथन या उक्ति, जो अपने विशिष्ट अर्थ के आधार पर संक्षेप में ही किसी सच्चाई को प्रकट कर सके, लोकोक्ति अथवा कहावत कही जाती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अंतर–मुहावरा देखने में छोटा होता है अर्थात् पूरे वाक्य का एक अंग-मात्र होता है। जैसे–लाठी खाना। इस वाक्यांश में 'खाना' का अर्थ 'प्रहार सहना'; क्योंकि लाठी खाने की चीज नहीं है, परंतु लोकोक्ति में जिस अर्थ को प्रकट किया जाता है, लगभग पूर्ण होता है। उसमें अधूरापन नहीं होता; जैसे–उलटा चोर कोतवाल को डांटे। इस उदाहरण नहीं है, न वाक्य ही अधूरा है।

'मुहावरा' एक वाक्यांश है, जो साधारण अर्थ का बोध न कराकर, किसी विशेष अर्थ का बोध करवाता है। 'मुहावरे' का साधारण या शब्दिक अर्थ नहीं लिया जाता अपितु किसी विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

मुहावरों की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं–

(क) मुहावरा वाक्यांश होता है।

(ख) मुहावरा किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त के लिए किया जाता है।

(ग) मुहावरों का अर्थ प्रसंग के अनुसार होता है।

(घ) मुहावरे का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जाता, बल्कि यह वाक्य के बीच में प्रयोग किया जाता है तथा इस प्रकार यह वाक्य का अंग बन जाता है।

(ङ) मुहावरे के मूल रूप में कभी परिवर्तन नहीं होता; जैसे–'अक्ल चरने जाना' एक मुहावरा है। यदि 'अक्ल' के स्थान पर 'बुद्धि चरने जाना' प्रयोग किया जाए, तो वह अशुद्ध होगा।

(ग) पश्चिमी और पूर्वी हिंदी

उत्तर–हिंदी क्षेत्र के पश्चिमी भाग की उपभाषाओं के समूह के लिए डॉ. ग्रियर्सन ने पश्चिमी हिंदी नाम दिया है। क्षेत्र की दृष्टि से पश्चिमी हिंदी का विस्तार पश्चिम में पंजाबी और राजस्थानी की सीमा से लेकर पूरब में अवधी और बघेली की सीमा तक, उत्तर में पहाड़ी हिंदी की सीमा तक और दक्षिण में मराठी तक चला गया है। इसके अंतर्गत खड़ी बोली (कौरवी), बांगरू, ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुंदेली, ये पाँच भाषाएँ मानी गई हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी इन पाँचों के अतिरिक्त निमाड़ी को भी इसी वर्ग के अंतर्गत मानते हैं। इसके अतिरिक्त दक्षिण में बम्बई, मद्रास और हैदराबाद के आस-पास मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त दक्खिनी हिंदी भी इसी वर्ग की भाषा है। खड़ी बोली का क्षेत्र देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर, रामपुर तथा मुरादाबाद है तथा अन्य बोलियों का क्षेत्र आगरा, मथुरा, मैनपुरी, एटा आदि है।

पश्चिमी हिंदी की सामान्य विशेषताएँ हैं-

1. इसके उच्चारण में थोड़ा खरापन अधिक है।

2. कर्त्ता परसर्ग का चिह्न 'ने' विशेष रूप से हमारा ध्यान खीचता है।

3. पंजाबी का अल्प किंतु अनुपेक्षणीय प्रभाव है।

4. आकार बहुला बोलियों में 'ड़' की अपेक्षा 'ड' और वैश्विक 'न' की अपेक्षा 'ण' का उपयोग होता है।

पूर्वी हिंदी के अंतर्गत अवधी, बघेली, छतीसगढ़ी बोलियाँ आती हैं। इनका क्षेत्र कानपुर, लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, बिलासपुर, दुर्ग आदि प्रदेश हैं। इस भाषा को बोलने वाले की संख्या ढाई करोड़ से अधिक है इसमें कर्त्ता कारक का परसर्ग 'ने' नहीं प्रयुक्त होता है। क्रिया के सकर्मक अकर्मक रूप का कर्त्ता पर प्रभाव नहीं पड़ता है। क्रिया रूप कुछ जटिल है। ये तो बहुत से तिङन्तीय रूप अभी चलते हैं और दूसरे क्रिया के साथ सार्वनामिक प्रत्यय लगाते हैं, जैसे-आइतई (मैं आता हूँ), पूछिस (उसने उससे पूछा) आदि।

(घ) विकारी और अविकारी शब्द

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-97, 'विकारी और अविकारी शब्द'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा

NEERAJ PUBLICATIONS

भाषाविज्ञान

भाषा और संप्रेषण

1

परिचय

www.neerajbooks.com

भाषा मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। मानव-सभ्यता को विकसित एवं गतिशील बनाने के लिए संप्रेषण की आवश्यकता के रूप में उच्चरित ध्वनि की एक खास व्यवस्था भाषा कहलाती है। भाषा मूलत: एक संप्रेषण-व्यवहार है तथा ध्वनित इकाइयों के माध्यम से मानव की भावाभिव्यंजन का प्रधान साधन है। संप्रेषण भाषा-व्यवहार से संबंधित एक ऐसा प्रकार्य है, जो भाषा के विविध संदर्भों एवं प्रयोगों को दर्शाता है। अत: संप्रेषण केवल वक्ता और श्रोता के बीच विचारों का आदान-प्रदान ही नहीं करता है, बल्कि आधुनिक युग में यह विज्ञान एवं तकनीक के माध्यम से एक ही साथ संपूर्ण विश्व को संबोधित करने की क्षमता रखता है। बहरहाल संप्रेषण भाषा का अंतिम लक्ष्य न होकर भी महत्त्वपूर्ण साध्य अवश्य है, जिसका विवरण इस अध्याय में दिया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

संप्रेषण क्या है?

संप्रेषण, भावाभिव्यक्ति का ज्ञापन कराना है। अर्थात् संदेश भेजने एवं ग्रहण करने की सार्थक क्रिया ही संप्रेषण है। मनुष्य अपने विचारों को प्रेषित करने के लिए भाषा एवं भाषेतर दोनों ही प्रकार के उपादानों का प्रयोग करता है। भाषा, मानव के अमूर्त विचारों की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन है, जो संप्रेषण-व्यवहार में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं समर्थ उपादान है। इसके साथ ही आंगिक चेष्टाओं के माध्यम से भी व्यक्ति अपने संदेश को अन्य व्यक्ति के पास प्रेषित करता है। किन्तु मानव जीवन की जटिल से जटिल अभिव्यक्ति अर्थात् ज्ञान-विज्ञान, अर्थव्यवस्था, राजनीति, शासन व्यवस्था, सामाजिक कार्य-व्यापार आदि की अभिव्यक्ति भाषा के वाचिक एवं लिखित रूप से ही संभव है। अत: संप्रेषण का तात्पर्य केवल विचारों का आदान-प्रदान ही नहीं होता है, बल्कि संप्रेषण द्वारा अनेक प्रकार के गूढ़ एवं अमूर्त सिद्धांतों का अर्थ ज्ञापन भी होता है। संप्रेषण के कई प्रकार हो सकते हैं—व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, व्यक्ति और समाज के बीच, समाज और समाज के बीच आदि। आधुनिक वैज्ञानिक विकास के दौर में रेडियो, टी.वी, अखबार आदि संचार माध्यम संप्रेषण के वृहत् स्वरूप को उपस्थित करते हैं।

संप्रेषण का स्वरूप

संप्रेषण भाषा का नितांत आंतरिक पक्ष है। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा

www.neerajbooks.com

अपनी आत्माभिव्यक्ति को लिखित या वाचिक रूप में भाषा के माध्यम से प्रकट कर समाज को संप्रेषित करता है। अत: भाषा के अध्ययन एवं विश्लेषण के संदर्भ में संप्रेषण के अध्ययन से उसके विविध पक्षों की जानकारी मिलती है। संप्रेषण द्वारा भाषा के सामाजिक स्तर-भेद से अवगत हुआ जा सकता है। आंगिक चेष्टाओं द्वारा प्रेषणीयता का अर्थ पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाता है, लेकिन बोलते समय ये आंगिक क्रियाएँ अभिव्यक्ति को मजबूती प्रदान अवश्य करती हैं। अत: संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है तथा इस भाषिक संप्रेषण के भी कई पक्ष हैं, जो सामाजिक-सांस्कृतिक प्रकार्यों से संबंधित हैं। अर्थात् भाषा की प्रयुक्ति संबंधी विशेषताएँ, जैसे–कार्यालय, विज्ञापन, प्रशासनिक कार्यों आदि के संदर्भ में भाषा का किसी खास अर्थ के सापेक्ष प्रयोग, संप्रेषण एवं भाषा के विविध प्रयोजनों को दर्शाती है।

संप्रेषण-व्यवहार में एक पूरी व्यवस्था कार्य करती है। वक्ता, श्रोता, माध्यम (वायु) तथा संदेश के होने पर ही संप्रेषण पूर्ण होता है। किन्तु संप्रेषण का एक भौतिक पक्ष भी है, जिसमें माध्यम की विविधता के कारण संप्रेषण के स्वरूप में विस्तार हुआ है। आदिकाल में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच संप्रेषण का व्यवहारजन्य उपयोग होता था परंतु आधुनिक युग में व्यावसायिक प्रयोजनों ने संप्रेषण को संचार के व्यापक पटल पर उपस्थित कर इसे सामूहिक एवं वैश्विक रूप प्रदान किया है, जैसे-टेलीफोन, अख़बार, रेडियो, इंटरनेट, टी.वी. इत्यादि।

समाज में भाषा का प्रयोग संप्रेषण के रूप में ही होता आया है, भले ही संप्रेषण के प्रयोजन अलग-अलग रहे हों। सम्राट अशोक अपने शिलालेखों के माध्यम से जनता को संप्रेषित करते थे तो कई राजाओं ने ताम्रपत्रों एवं मुनादी (नगाड़े की आवाज के साथ सूचना) के माध्यम से किसी विशेष अवसर पर विशेष सूचना देने का कार्य किया।

वस्तुत: संप्रेषण के 'विश्वग्राम' वाले कॉन्सेप्ट में अनेक स्वरूप हो गए हैं। फिर भी इसका मूल उद्देश्य संदेश को पहुँचाना ही रहा है। भाषा के अनुवाद का जब सवाल खड़ा होता है तो संप्रेषण को ही ध्यान में रखकर उसे अनूदित किया जाता है।

संप्रेषण साधना

किसी अभिप्रायपूर्ण संदेश की सिद्धि तभी संभव होगी, जबकि उसके उद्देश्य अर्थ का संप्रेषण पूर्ण होगा। संप्रेषण एक प्रायोजनिक भाषिक संदेश का प्रसारण है, जिसकी प्रेषणीयता एक क्रमिक प्रक्रिया के द्वारा गुजरती है तथा श्रोता में प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। सफल संप्रेषण के लिए अनिवार्य शर्तें निम्नलिखित हैं–

(क) भाषायी दक्षता।

(ख) वक्ता, श्रोता, संदेश और माध्यम।

(ग) संदर्भ, प्रयोजन एवं रुचि।

(क) भाषायी दक्षता–भाषाई दक्षता से तात्पर्य यह है कि संदेश प्रसारित करने वाला एवं ग्रहण करने वाला, दोनों ही पक्षों को प्रसारित भाषा का ज्ञान होना चाहिए। यह ज्ञान यदि केवल कामचलाऊ है तो महज कुछ संदेश ही संप्रेषण को प्राप्त हो सकेंगे। गूढ़ एवं जटिल संरचनात्मक अभिव्यक्ति को श्रोता तभी समझ सकेगा जब वह प्रयोग की भाषा में कुशल या दक्ष होगा।

(ख) वक्ता, श्रोता, संदेश और माध्यम–किसी भी विचार का आदान-प्रदान बिना वक्ता, श्रोता और माध्यम (चैनल) के संभव नहीं है। यदि व्यक्ति स्वयं चिंतन करता है तो उच्चारण की आवश्यकता नहीं होगी और इसे एकालाप या बड़बड़ाना कहेंगे, वहीं इन उपर्युक्त उपादानों की उपस्थिति से संप्रेषण की सिद्धि होती है।

(ग) संदर्भ, प्रयोजन एवं रुचि–संप्रेषणीयता के लिए संदर्भ का होना अत्यंत जरूरी है। बिना किसी संदर्भ के व्यक्ति अगर संदेश देता भी है तो वह अनावश्यक प्रलाप के सिवा कुछ नहीं होगा। साथ ही प्रयोजन एवं रुचि वक्ता और श्रोता के बीच गंभीरता लाती है और संदेश की प्रतिक्रिया भी होती है। अत: भाषा की संप्रेषण साधना एक विशिष्ट प्रक्रम है, जो साधारणत: अभिभाषण के दौरान सुचारु रूप से चलती रहती है।

संप्रेषण का तकनीकी पक्ष

भाषिक संप्रेषण व्यवहार में प्रतीक वह माध्यम है, जो अमूर्त भावों अथवा विचारों को एक खास कोड के द्वारा छवि-चित्र या दृश्य के रूप में मानसपटल पर उपस्थित करता है। यह एक संपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें मस्तिष्क ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्थित इकाई को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है, जिससे हम उच्चरित कथ्य को समझ पाते हैं। अत: भाषा एक कोड-व्यवस्था है, जिससे अर्थ का संप्रेषण कोड खुलने पर ही पता चलता है। इस कोड-व्यवस्था की संरचनात्मक जानकारी होनी आवश्यक है। भाषा ज्ञान, भाषा की कुशल अभिव्यक्ति, संदेश का अर्थपूर्ण प्रसारण एवं चैनल की व्यवधान रहित उपस्थिति भाषा संप्रेषण के तकनीकी पक्ष हैं।

भाषा की संरचना व्यवस्था में ध्वनि, पद, वाक्य की एक व्याकरणिक व्यवस्था होती है, जो संदेश को मूर्त रूप प्रदान करती है। इसमें यदि परिवर्तन किया जाएगा तो अवश्य ही उसके अर्थ में अंतर हो जाएगा। अत: संदेश का सही अर्थ में संप्रेषण तभी संभव है जब भाषा व्याकरणिक दोषों से मुक्त हो। इसके साथ ही कभी-कभी व्यक्तिगत दोष अर्थात् वाचन की अपूर्णता या वागेन्द्रिय दोष संदेश, संप्रेषण में दोष उत्पन्न कर देते हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

माध्यम (चैनल) के रूप में सामान्य प्रयुक्त माध्यम वायु है, जो ध्वनि को श्रोता तक पहुँचाती है। यदि वक्ता और श्रोता के बीच आवश्यकता से अधिक दूरी होगी तो अवश्य ही संप्रेषण में बाधा उत्पन्न होगी। साथ ही जब भीड़-भाड़ अथवा शोरगुल भरे वातावरण में माध्यम में व्यवधान उत्पन्न होगा। संप्रेषणीयता के अन्य माध्यमों में संचार सुविधा के रूप में टेलीफोन, रेडियो, टी.वी. आदि में भी 'टेक्नीकल' खराबी हो सकती है।

अत: संप्रेषण का तकनीकी पक्ष एक तो कोडबद्धता एवं डिकोडिकरण है, जो व्यक्ति स्तर की तकनीक है तो दूसरा इसके सामाजिक स्वरूप के संचार माध्यमों में उपस्थित होता है, जो कि विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी का व्यवधान है। इस प्रकार संदेश की सही संप्रेषणीयता के लिए कोड व्यवधान के बावजूद अर्थ ग्रहण करने की क्षमता विकसित करने से श्रोता अनुमान के द्वारा सही अर्थ को ग्रहण कर सकता है।

संप्रेषण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

भाषा सामाजिक होती है। भाषा का अर्जन समाज से होता है और उसका विकास भी समाज के संदर्भ में ही होता है। भाषा की अर्थवत्ता सामाजिक संदर्भ से ही है। भाषा संप्रेषण का साधन है। संप्रेषण की क्रिया समाज के अंदर ही संभव होती है। निरर्थक शब्द या भाषा या एकालाप की कोई सार्थकता नहीं होती। संप्रेषणीयता भाषा की अनिवार्य शर्त है। समाज भाषाविज्ञान संप्रेषण को महत्त्व देते हुए भाषिक संप्रेषण के आधार पर समाज के अंतर्गत होने वाले परिवर्तनों एवं सांस्कृतिक विविधता का अध्ययन-विश्लेषण करता है। प्रत्येक समाज की अपनी अलग भाषा होती है अथवा प्रत्येक भाषिक समाज की अपनी अलग कोड संरचना होती है।

संप्रेषण के साधनों में समाज के अंतर्गत अनेक स्तर भेद दिखाई पड़ते हैं। लिखित एवं वाचिक भाषिक संप्रेषण से किसी समाज में उपस्थित भाषा के विविध प्रयोजनों का पता चलता है। साथ ही एक ही समाज के अंतर्गत भाषा के कई रूप नजर आते हैं, जो अपनी प्रेषणीयता की दृष्टि से उच्च एवं निम्न कोड का निर्धारण करते हैं। लिखित भाषा के रूप में, इतिहास, दर्शन, विज्ञान आदि गूढ़ विषयों के साथ-साथ समाज की सांस्कृतिक परंपरा को भी संप्रेषित करती है वहीं वाचिक भाषा, विचार-विनिमय, भाषण आदि के संदर्भ में प्रयुक्त होती है।

भाषा के इन दोनों सामाजिक संदर्भों में एक खास व्याकरणिक व्यवस्था होती है, जो अर्थ-संप्रेषण करती है। भले ही वाचिक या उच्चरित भाषा में विचलन की प्रक्रिया तीव्र होती है लेकिन दोनों ही रूपों में तब तक संप्रेषण संभव नहीं है जब तक कि उनकी अपनी सुनिश्चित प्रणाली न हो। इसी प्रकार कहा जाता है कि समृद्ध भाषा में ही यह व्याकरणिक व्यवस्था होती है जबकि यह सत्य नहीं है। उदाहरणस्वरूप, छोटे-से-छोटे समूह में भी बोली जाने वाली भाषा (बोली) में भी एक व्यवस्था होती है एवं आदिवासियों व जनजातियों की बोलियों में भी प्रत्येक भाषा की भाँति शब्द और वाक्य स्तर पर व्यवस्था होती है। यहाँ तक कि कृत्रिम भाषा 'एस्पेरेंतो' में भी या फिर व्यावसायिक एवं कूट भाषा में भी एक खास व्यवस्था होती है। कहने का मतलब है कि भाषा-शिक्षण एवं भाषा-व्यवहार के लिए भाषा में व्यवस्था का होना अनिवार्य शर्त है तभी समाज में भाषा स्वीकृत या व्यवहृत होती है।

संप्रेषण के बढ़ते चरण

समाज के विकास के साथ-साथ संप्रेषण के स्वरूप में भी विस्तार होता गया और संप्रेषण व्यक्ति स्तर से, समाज स्तर तक और समाज स्तर से संपूर्ण विश्व को संबोधित करने में सक्षम हो गया। संप्रेषण के वैश्विक विस्तार को सफल बनाने में माध्यम की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, जो संचार (communications) के नाम से जाना जाता है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने संप्रेषण में क्रांति ला दिया है, जिसने सूचना एवं संचार के आधुनिक उपकरणों के माध्यम से संप्रेषण में व्यापक अभिवृद्धि एवं विशाल जन-समूह को एकजुट करने में सफलता पाई है। इसी की देन हैं–सूचना समाज, संचार, दूरसंचार, जनसंचार, इत्यादि।

सूचना-समाज (The Information Society)–सूचना-समाज एक आधुनिक सामाजिक विकास का चरण है। संचार माध्यमों में हुए आमूल-चूल परिवर्तन तथा नए वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग से संप्रेषण के क्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ और प्रत्येक व्यक्ति इस 'ग्लोबलाइजेशन' की धारा में सम्मिलित हो गया। आज किसी घटना विशेष की सूचना का दूरी से कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। चाहे अमेरिका की कोई घटना या संबोधन हो, या फिर स्विट्जरलैण्ड में कोई बैठक हो रही हो, उसका सम्पूर्ण क्रियाकलाप हम घर बैठे टी.वी. या इंटरनेट पर देख सकते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में सूचना एवं प्रौद्योगिकी (Information Technology) के विकास ने 'विश्वग्राम' की अवधारणा को सार्थक किया है। इस क्रांतिकारी विकास ने जहाँ एक ओर विश्व संबोधन का मार्ग प्रशस्त किया है वहीं दूसरी ओर ज्ञान-विज्ञान, फैशन, दर्शन, राजनीति, आर्थिक, सामाजिक आदि सभी प्रकार की जानकारी को व्यक्ति के लिए सुलभ बना दिया है। चाहे कृषि के क्षेत्र में जानकारी प्राप्त करनी हो या स्वास्थ्य संबंधी, सभी का प्रसारण आसानी से उपलब्ध हो गया है। इस सुविधा ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति को एक-दूसरे से संबोधित किया है।

सूचना समाज की इस नयी व्यवस्था में प्रत्येक भाषा समाज अपने से अलग समाज तथा संस्कृति के संपर्क में आती है और

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

संप्रेषण के लिए आवश्यक कोड की जानकारी प्राप्त करना चाहती है। अतः सूचना समाज ने न केवल ज्ञानवृद्धि में सहायता प्रदान किया है बल्कि पूरे विश्व की भाषिक व्यवस्था को प्रभावित किया है, जिससे बहुभाषिक समाज का जन्म हो रहा है और संप्रेषणीयता के अनिवार्य साधन के रूप में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया भी व्यापक रूप में विस्तार प्राप्त कर रही है।

संचार (Communication)–संचार का तात्पर्य है वहन करना या संदेश देना। अर्थात् विचारों के सशक्त माध्यम के रूप में संचार की उपयोगिता संदेश के संचरण के महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में है। किसी भी संदेश को प्रसारित करने के अनिवार्य तत्त्व चैनल के रूप में रेडियो, टेलीफोन, टी.वी., अखबार आदि ने जिस क्रान्तिकारी सूचना संप्रेषण की अभिवृद्धि की है, उससे संचार की महत्ता का पता चलता है। संचार को एक प्रकार से संप्रेषण कहा जा सकता है। इस संचार का लक्ष्य भी संप्रेषण ही है। संचार वह माध्यम है जिसमें संगठित क्रिया द्वारा तथ्यों, सूचनाओं, विचारों, विकल्पों एवं निर्णयों का दो या अधिक व्यक्तियों के मध्य अथवा व्यावसायिक उपक्रमों के मध्य आदान-प्रदान होता है। संदेशों का आदान-प्रदान लिखित, मौखिक अथवा सांकेतिक हो सकता है। बातचीत, विज्ञापन, रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्र, ई-मेल आदि कुछ भी माध्यम हो सकता है।

दूरसंचार (Tele-communication)–मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक रूप से सीमित दूरी तक ही पहुँच पाती थी लेकिन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने इसका विस्तार दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक कर दिया है। अब प्रयोक्ता अपनी बातों को एक साथ पूरे संसार के लोगों तक पहुँचा सकता है तथा भारत से अमेरिका में रह रहे अपने दोस्त अथवा संबंधी से बातचीत कर सकता है। दूरसंचार माध्यम से लिखित संप्रेषण को भी विस्तार प्राप्त हुआ है। M.M.S, S.M.. E-mail आदि माध्यमों से लिखित संप्रेषण का भी व्यापक प्रसार हुआ है।

किसी भी संदेश के संचरण की तीव्रता एवं उसकी व्यापकता माध्यम पर निर्भर करती है। वायु के माध्यम से मुख से उच्चरित ध्वनि को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए 'चैनल' की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। दूरसंचार एक प्रकार के चैनल का कार्य करता है, जिसके साधन रेडियो, टेलिफोन, इंटरनेट, अखबार आदि हैं।

जनसंचार (Mass Communication)–संप्रेषण जब व्यक्तिगत स्तर से विस्तृत होकर सामाजिक स्तर तक पहुँच जाता है तब उसे जनसंचार (Mass Communication) कहते हैं। यह जनसंचार संबोधन का ऐसा व्यापक स्वरूप है, जिसमें समाज को एक साथ संबोधित किया जाता है। प्राचीन काल में भी जनसंचार के लिए शिलालेख, भोजपत्र, लेख, ताम्रपत्र, लेख इत्यादि की व्यवस्था होती थी परंतु ये सब एक सीमित समाज को ही संबोधित कर पाती थीं। जनसंचार एक अतिविकसित आधुनिक संप्रेषण व्यवस्था है जिसमें संचार माध्यमों की सुविधाजनक बोधगम्यता ने संपूर्ण मानव समाज को एक साथ लाकर खड़ा कर दिया है। जनसंचार दूरसंचार का ही विकसित एवं व्यापक स्वरूप है। इस प्रकार का संप्रेषण लिखित एवं मौखिक दोनों ही है। टेलीविजन, अखबार, रेडियो, इंटरनेट, रिपोर्ताज आदि साधनों ने जनसामान्य तक प्रत्येक जानकारी को सुलभ कराने का कार्य किया है।

पिछले दो दशकों में प्रौद्योगिकी में हुए विकास के परिणामस्वरूप सूचना एवं प्रसारण के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। इस प्रक्रिया में 'सेटेलाइट' का विशेष महत्त्व है जिसने पूरे विश्व को एक मंच पर ला खड़ा किया है। भारत में जनसंचार के माध्यमों के रूप में प्रसार भारती, आकाशवाणी, दूरदर्शन, डी.डी. मेट्रो, डी.डी. इण्डिया, ज्ञानदर्शन आदि सरकारी प्रयास हैं तो प्रेस एवं प्रिण्ट मीडिया, यूनाइटेड न्यूज आफ इंडिया, प्रकाशन विभाग आदि लिखित प्रयास हैं।

संप्रेषण और संचार में अंतःसंबंध–संप्रेषण एक क्रिया व्यवहार है, जो मनुष्य-मनुष्य के बीच विचारों का आदान-प्रदान करता है। ध्वनित इकाइयों की व्यवस्थित प्रणाली के माध्यम से कोड द्वारा भावों का अर्थ-ज्ञापन ही संप्रेषण कहलाता है। अर्थात् किसी भी समाज में भाषा प्रयोक्ता के भाषण का लक्ष्य अपने विचारों का संप्रेषण ही होता है। संप्रेषण दो प्रकार के हो सकते हैं-मौखिक और लिखित। इस संप्रेषण व्यवस्था में सही अर्थ ज्ञापन हेतु कुछ अनिवार्य शर्तें आवश्यक हैं–वक्ता, श्रोता, माध्यम एवं संदेश। इनमें से किसी की भी अपूर्णता संप्रेषण में अवरोध उत्पन्न कर सकती है।

संचार एक आधुनिक विकसित माध्यम है। संप्रेषण एवं संचार को अंग्रेजी में Communication कहा जाता है। संचार एक प्रकार से संप्रेषण है किन्तु इनमें कुछ तात्त्विक अंतर भी आ जाते हैं। संप्रेषण की क्रिया में जहाँ पूर्ण अर्थ का द्योतन होता है वहीं संचार अपने चैनलों की महत्ता से अर्थ का द्योतन करता है। वस्तुतः संचार के अंतर्गत आने वाले उपादान–दूरसंचार, जनसंचार आदि संप्रेषण के ही विस्तृत स्वरूप हैं।

भाषा शिक्षण में संप्रेषण का उपागम

भाषा के संप्रेषणपरक पक्ष को विकास देने वाले भाषाविदों क्रिस्टोफर केन्डलिन और हेनरी विडोसन ने ब्रिटेन के प्रकार्यात्मक भाषाविदों फर्थ और हैलिडे के चिंतन के कुछ बिन्दुओं के आधार पर यह विशाल भवन खड़ा किया। भाषा-शिक्षण की इस विधि को संप्रेषणपरक भाषा शिक्षण नाम दिया। भाषा अर्जन संप्रेषण के माध्यम से ही होता है।

www.neerajbooks.com